'प्रकृति-चित्रण '

कवि परिचय

सेनापति

कविवर सेनापति रीतिकाल के उल्लेखनीय और विशिष्ट कवियों की श्रेणी में आते हैं। हिन्दी काव्य जगत में प्रकृति की अनुपम छटा बिखेरने वाले कवियों में सेनापति का नाम अत्यन्त आदर से लिया जाता है। इनका जन्म सन् 1589 ई. के आसपास अनूपशहर जिला बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) में अनुमानित है। इनके पिता का नाम गंगाधर दीक्षित था। इनके जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं हैं। कहा जाता है कि सेनापति का निधन सन् 1649 हुआ था।

सेनापति के लिखे हुए दो ग्रन्थ बताये जाते हैं – 'काव्य कल्पद्रुम' और 'कवित्त रत्नाकर'। काव्य कल्पद्रुम अभी तक उपलब्ध नहीं हो पाया। कवित्त रत्नाकर में कुल 394 छन्द उपलब्ध हैं।

सेनापति ने 'कवित्त रत्नाकर' में जीवन के विभिन्न रंग उपस्थित किए हैं। इस ग्रन्थ से यह स्पष्ट होता है कि इनकी रचना रीति परम्परा को ध्यान में रखकर की गई है। सेनापति को सर्वाधिक सफलता ऋतु वर्णन में मिली है । ग्रीष्म और वर्षा का वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली है । ग्रीष्म की विविध दशाओं का वर्णन करते हुए कवि ने विशेष रूप से ग्रीष्म पीड़ित पंथी और पक्षी का अद्‌भुत वर्णन किया है।

सेनापति की कविता में उनकी प्रतिभा फूटी पड़ती है । शब्दों के प्रयोग और भाषा पर सेनापति का असाधारण अधिकार है। उनके वर्णों और शब्दों का ध्वनि-सौन्दर्य मनोहर है। सेनापति अलंकार प्रिय कवि हैं। उनके छन्दों में अलंकारों की भरमार है। सेनापति का प्रिय अलंकार श्लेष है। केशवदास को छोड़कर और कोई कवि सेनापति के समकक्ष नहीं ठहरता। सेनापति का ब्रजभाषा पर पूर्ण अधिकार है। उनकी भाषा परिष्कृत है। उन्होने मनहरण (कवित्त) और घनाक्षरी छन्दों

प्रकृति ने मनुष्य की संवेदनाओं का विस्तार किया है और मनुष्य के भाव-जगत को अपनी उपस्थिति से व्यापक बनाया है। काव्य में प्रकृति को कभी आलंबन और कभी उद्‌दीपन के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। काव्यगत अलंकारों के निर्माण में भी प्रकृति की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। अधिकांश कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण करके प्रकृति और मनुष्य के सहवर्ती स्वभाव को ही रेखांकित किया है। हिन्दी के आदिकाल से ही काव्य में प्रकृति सक्रिय रही है। हमारा आदिकाव्य अधिकांशत: प्रकृति से संवेदित है। मध्यकालीन हिन्दी काव्य में प्रकृति का वर्णन षट्‌ऋतु वर्णन परम्परा तथा बारहमासा वर्णन परम्परा के अंतर्गत किया गया है।

रीतिकाल में कवियों ने प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। इस युग में प्रकृति की बदलती छवियों का मनोहारी दिग्दर्शन कलात्मक परिवेश में किया गया है। आधुनिक युग में भी प्रकृति के व्यापक सरोकारों को काव्य में कल्पना के विस्तार से परखा गया है। विशेष रूप से छायावादी काव्य के अंतर्गत प्रकृति के मानवीकरण के अनेक संदर्भ प्राप्त होते हैं। प्रकृति को आधुनिक संदर्भों में बदलते जीवन-व्यापारों के क्रम में इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि प्रकृति हमारी जड़ होती जा रही संवेदनाओं को उकसाने के लिए बार-बार कविता में उपस्थित हो जाती है।

कविता में प्रकृति हमारी संपूर्ण जीवन पद्‌धति हमारे पर्यावरण पर ही अवलंबित है। प्रकृति और कविता का जीवन से गहरा संबंध है। इसलिए प्रकृति कविता में सदैव विद्यमान रहेगी। वृक्ष, नदी, पहाड़, समुद्र, चिड़िया, शेर, आकाश और धरती कविता में निरंतर अपने नये-नये आशय लेकर कविता में उपस्थित होते रहेंगे।

रीतिकाल के प्रमुख कवि सेनापति ने षट्‌ऋतु वर्णन परंपरा में ऋतुओं की बदलती छवियों को अपनी अद्‌भुत कल्पना-शक्ति के सहारे प्रस्तुत किया है। संकलित कविताओं में उन्होंने बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर के वर्णन में इन ऋतुओं के गुण-धर्म के साथ इन ऋतुओं की प्राकृतिक सुषमा का चित्रण किया है। बसंत की शोभा, ग्रीष्म का ताप, वर्षा में बादल, बिजली और इन्द्रधनुष का सौंदर्य, शरद की विमल

का ही अधिकतर प्रयोग किया है। श्लेष, यमक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, रूपक, उपमा, अपन्हुति, अलंकारों का आपने स्पष्टत: प्रयोग किया है।

रीतिकालीन कवियों में प्रचलित परम्परा से हटकर काव्य रचना करने वाले कवियों में सेनापति का विशिष्ट स्थान है। आपका प्रकृति चित्रण तो अप्रतिम है। सेनापति की कविता शब्द चमत्कार तथा उक्ति वैचित्र्य की दृष्टि से अन्य कवियों के बीच सहज ही पहचानी जा सकती है। आपका ऋतु वर्णन हिन्दी साहित्य में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

छवि और शिशिर के छोटे पड़ते दिनों तथा लंबी होती रातों का दृश्य विधान कवि ने विभिन्न अलंकारों के माध्यम से किया है।

आधुनिक युग के प्रमुख छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत को तो प्रकृति का सुकुमार कवि ही कहा जाता है। उनकी कविता नौका विहार उनकी प्रकृति परक कविताओं में से एक श्रेष्ठ कविता है। इस कविता में कवि ने चाँदनी रात्रि में गंगा के सौंदर्य का चमत्कारी चित्रण किया है। गंगा के बदलते रूपों का वर्णन कवि ने कल्पना का आश्रय लेकर किया है। किनारों में लिपटी गंगा की धार और उसके रेतीले विस्तार के साथ-साथ जल पर तैरती नौका का अनेक उपमाओं के माध्यम से कविता में सुंदर वर्णन हुआ है। कविता के अंत में कवि ने जीवन की शाश्वत गतिशीलता और दार्शनिकता को व्यक्त किया है।

ऋतु वर्णन

बरन बरन तरु फूले उपवन बन
सोई चतुरंग संग दल लहियत है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
गुंजत मधुप गान गुन गहियत है॥
आवै आस-पास पुहुपन की सुबास सोई
सौंधे के सुगंध माँझ सने रहियत है।
सोभा कौ समाज, सेनापति सुख-साज, आज
आवत बसंत रितुराज कहियत है॥ 1॥

वृष कौ तरनि तेज सहसौ किरन करि,
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत हैं।
तचति धरनि, जग जरत झरनि, सीरी
छाँह कौ पकरि पंथी-पंछी बिरमत हैं॥
सेनापति नैंक दुपहरी के ढरत, होत
धमका विषम, ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनों सीरी ठौर कौं पकरि कौंनो,
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत है॥ 2॥

दामिनी दमक, सुरचाप की चमक, स्याम
घटा की झमक अतिघोर घनघोर तैं।
कोकिला, कलापी, कल कूजत हैं जित-तित
सीतल है हीतल, समीर झकझोर तैं।।
'सेनापति' आवन कह्यो हैं मनभावन, सु
लाग्यो तरसावन विरह जुर जोर तैं
आयो सखी सावन, मदन सरसावन
लाग्यो है बरसावन सलिल चहुँ ओर तैं॥ 3॥

पाउस निकास तातैं पायो अवकास, भयो
जोन्ह कौं प्रकास, सोभा ससि रमनीय कौं।
बिमल अकास, होत वारिज विकास, सेना-
पति फूले कास, हित हंसन के हीय कौ।।
छिति न गरद, मानौ रँगे है हरद सालि
सोहत जरद, को मिलावै हरि पीय कौं
मत्त हैं दुरद, मिट्यौ खंजन-दरद,रितु
आई है सरद सुखदाई सब जीय कौं॥ 4॥

सिसिर मे ससि कौ, सरूप पावै सबिताऊ।
घाम हूँ में चाँदनी की दुति दमकति है।
सेनापति होत सीतलता है सहस गुनी,
रजनी की झांईं, वासर में झलकति है।।
चाहत चकोर, सूर ओर दृग छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
चंद के भरम होत मोद है कुमोदनी को,
ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है॥ 5॥

कवि परिचय

सुमित्रानंदन पंत

आधुनिक काव्य धारा को प्राचीन रूढ़ियों से मुक्त कर नवीन दिशा की ओर मोड़ने तथा खड़ी बोली को रमणीय रूप प्रदान करने में पन्त जी का विशेष योगदान है। सुकुमार भावनाओं के कवि पन्तजी का जन्म सन् 1900 ई. को अल्मोड़ा (उत्तरांचल)के निकट कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम पं. गंगाधर पन्त था। जन्म के कुछ समय बाद ही आपकी माता का निधन हो गया। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कौसानी और अल्मोड़ा में हुई। गांधीजी के असहयोग आन्दोलन से जुड़े। सन् 1950 में आप आकाशवाणी से सम्बद्ध हुए। रेडियो को यह नाम आपकी ही देन है। पंतजी को साहित्य अकादमी और ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। भारत सरकार ने आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया है। 29 दिसम्बर सन् 1977 को प्रकृति के गीत गाने वाला यह गायक हमारे बीच से उठ गया।

पन्तजी की प्रमुख रचनाएँ है- वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, उत्तरा, अतिमा, कला और बूढ़ा चांद, लोकायतन, चिदम्बरा और वाणी । इसके अतिरिक्त इन्होंने तीन गीति नाट्य - ज्योत्सना, रजत शिखर तथा अतिमा, उपन्यास 'हार' तथा कहानी संग्रह 'पाँच कहानियाँ' भी प्रकाशित हैं।

पन्तजी हिन्दी की नई काव्य धारा के जागरूक कवि और कलाकार है। प्रकृति सुन्दरी की गोद में जन्म लेने तथा विद्यार्थी जीवन में अंग्रेजी कवि शैली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ की स्वच्छन्द प्रवृत्तियों से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण वे नई दिशा में अग्रसर हुए। वे प्रकृति और जीवन की कोमलतम विविध भावनाओं के कवि है। प्रकृति की प्रत्येक छवि को, जीवन के प्रत्येक रूप को उन्होंने आत्मविभोर और तन्मय होकर देखा है। उनके काव्य में दो धाराओं

नौका विहार

शांत, स्निग्ध, ज्योत्स्ना, उज्ज्वल।
अपलक अनंत, नीरव भूतल।
सैकत शैया पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल
लेटी हैं श्रांत, क्लांत, निश्चल
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि, मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुंतल।
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर लहराता तार तरल सुंदर,
चंचल अंचल सा नीलांबर
साड़ी की सिकुड़न-सी जिस पर, शशि की रेशमा विभा से भर,
सिमटी है वर्तुल, मृदुल लहर, चाँदनी रात का प्रथम प्रहर,
हम चले नाव लेकर सत्वर
सिकता की सस्मित सीपी पर, मोती की ज्योत्सना रही विचर,
लो, पालें चढ़ी, उठा लंगर
मृदु मंद-मंद मंथर-मंथर, लघु तरणि हंसनि-सी सुंदर,
तिर रही खोल पालों के पर
निश्चल जल के शुचि दर्पण पर, बिंबित हो रजत पुलिन निर्भर,
दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर
कालाकांकर का राजभवन, सोया जल में निश्चिंत प्रमन,
पलकों पर वैभव स्वप्न सघन, नौका में उठती जल-हिलोर,
हिल पड़ते नभ के ओर-छोर
विस्फारित नयनों से निश्चल, कुछ खोज रहे चल तारक दल,
ज्योतित कर नभ का अंतस्तल, जिनके लघु दीपों को चंचल,
अंचल की ओट किए अविरल,
फिरती लहरें लुक-छिप पल-पल।
सामने शुक्र की छवि झलमल, तैरती परी-सी जल में कल,
रुपहरे कचों में हो ओझल।
लहरों कें घूंघट से झुक-झुक, दशमी का शशि निज तिर्यकमुख,
दिखलाता, मुग्धा-सा रुक-रुक।

का समावेश हो गया है- एक में उनके कवि हृदय का स्पन्दन है दूसरी में विश्व जीवन की धड़कन। पन्तजी मुख्यत: दृश्य जगत के कवि है। पहले वे प्राकृतिक सौन्दर्य के कवि थे, बाद में वे जीवन - सौन्दर्य कवि के रूप में बदल गये । पन्तजी विश्व में ऐसा समाज चाहते हैं जो कि एक-दूसरे के सुख-दुख बाँट सके।

जग पीड़ित रे अति दुःख से, जग पीड़ित रे अति सुख से
मानव जग में बट जाये, दुःख-सुख से और सुख-दुःख से ।।

इनकी छायावादी कविताएँ अत्यन्त कोमल एवं मृदुल भावों को अभिव्यक्त करती हैं। इन्ही कारणों से पन्तजी को 'प्रकृति की कोमल भावनाओं का सुकुमार कवि ' कहा जाता है।

पन्तजी की रचनाओं का भाव जगत जैसे-जैसे बदलता गया है, इनकी काव्य कला में दृष्टि भी परिवर्तित होती रही है। पन्तजी की भाषा कोमलकान्त पदावली से युक्त सहज खड़ी बोली है। पन्तजी की भाषा संस्कृत निष्ठ और परिमार्जित है,जिसमें एक सहज प्रवाह देखने को मिलता है। पन्तजी की शैली में छायावादी काव्य शैली की समस्त विशेषताएँ यथा- लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, ध्वन्यात्मकता, चित्रात्मकता, सजीव और मनोरम बिम्ब-विधान आदि प्रचुर मात्रा में मिलती है। पन्तजी के काव्य में कल्पना ही कविता का मेरूदण्ड है। इनका प्रिय रस श्रृंगार है परन्तु इनकी रचनाओं में शान्त, अद्‌भुत, करुण, रौद्र, आदि रसों का भी सुन्दर परिपाक हुआ है। इन्होंने नवीन छन्दो का प्रयोग कियाहै। पन्तजी का मत है कि मुक्तक छन्दों की अपेक्षा तुकान्त छन्दों के आधार पर ही काव्य -संगीत की रचना हो सकती है। उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा,अन्योक्ति आदि अलंकार इन्हे विशेष प्रिय हैं। इन्होंने मानवीकरण और ध्वन्यार्थ व्यंजना जैसे पाश्चात्य अलंकारो के भी प्रयोग किये हैं।

हिन्दी के आधुनिक कवियों में पन्तजी का महत्वपूर्ण स्थान है। खड़ी बोली की काव्य भाषा में कोमलकान्त पदावली का प्रयोग करने वाले पन्तजी अनन्य कवि हैं। छायावाद के प्रमुख कवियों - प्रसाद,पन्त,निराला की त्रयी में पन्तजी का महत्वपूर्ण स्थान है। पन्तजी को छायावाद का स्तम्भ और प्रकृति का सुकुमार कवि माना जाता है। पन्तजी के अनुसार-

वियोगी होगा पहला कवि,आह से उपजा होगा गान।
उमड़कर नयनों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।

अब पहुँची चपला बीच धार, छिप गया चाँदनी का कगार।
दो बाहों से दूरस्थ तीर, धारा का कृश कोमल शरीर।
आलिंगन करने को अधीर।
अति दूर क्षितिज पर विटप-भाल, लगती भू-रेखा सी अराल,
अपलक-नभ नील-नयन विशाल,
माँ के उर पर शिशु-सा, समीप, सोया धारा में एक द्वीप,
उर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप,
वह कौन विहग? क्या विकल कोक, उड़ता हरने निज विरल शोक?
छाया की कोकी को विलोक।
पतवार घुमा अब प्रतनु भार। नौका घूमी विपरीत धार।
डांडों के चल करतल पसार, भर-भर मुक्ताफल फेन स्फार,
बिखराती जल में तार हार।
चाँदी के साँपों की रलमल, नाचती रश्मियाँ जल में चल,
रेखाओं सी खिंच तरल-तरल।
लहरों की लतिकाओं में खिल, सौ-सौ शशि, उड़ै झिलमिल।
फैले-फूले जल में फेनिल।
अब उथला सरिता का प्रवाह, लग्गी से ले-ले सहज थाह।
हम बढ़े घाट को सहोत्साह!
ज्यों-ज्यों लगती है नाव पार, उर में आलोकित शत विचार
इस धारा-सा ही जग का क्रम,
शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम
शाश्वत नभ का नीला विकास,
शाश्वत शशि का यह रजत हास
शाश्वत लघु लहरों का विलास
हे जग-जीवन के कर्णधार!
चिर जन्म-मरण के आर-पार शाश्वत जीवन नौका विहार,
मैं भूल गया अस्तित्व-ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण,
करता मुझको अमरत्व दान।

अभ्यास

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(1) खंजन पक्षी का दु:ख किस ऋतु में मिट जाता है?

(2) किस ऋतु में सूर्य चन्द्रमा के समान दिखाई देता है?

(3) नौका विहार कविता में किसकी तुलना चाँदी के साँपों से की है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) सेनापति के अनुसार वर्षा ऋतु में प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं?

(2) गंगाजल में प्रतिबिम्बित चन्द्रमा के लिए कवि ने क्या कल्पना की है?

(3) गंगा की धार के मध्य स्थित द्वीप कवि को कैसा दिखाई देता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) सेनापति ने बसंत को ऋतुराज क्यों कहा है?

(2) सेनापति ने ग्रीष्म की प्रचण्डता का वर्णन किस प्रकार किया है?

(3) तापस बाला के रूप में विश्राम कर रही गंगा के सौन्दर्य का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है?

(4) रात्रि के प्रथम प्रहर की चाँदनी में नदी, तट व नाव का सौन्दर्य क्यों बढ़ गया है? स्पष्ट कीजिए।

(5) कवि ने नौका विहार की तुलना जीवन के शाश्वत रूप से किस प्रकार की है?

(6) निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

(1) चाहत चकोर ..... सकति है।

(2) मेरे जान पौनो .....बितवत है।

(3) मृदु मंद-मंद ..... क्षण भर।

(4) माँ के उर पर ..... विपरीत धार।

काव्य सौन्दर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

   बरन, पंछी, सोभा, सहसौ, पौनों, पाउस, सांप, चाँदी, बरसा

2. निम्निलिखित पंक्तियों के सामने अलंकारों के कुछ विकल्प दिए गए हैं। सही विकल्प छाँटकर लिखिए-

   (अ) बरन-बरन तरु फूले उपवन बन

   (उपमा/यमक/अनुप्रास)

   (आ) मेरे जान पौनों सीरी ठौर कौं पकरि कौंनो

   घरी एक बैठि कहूँ धामे बितवत है।(उत्प्रेक्षा/रूपक/उपमा)

   (इ) माँ के उर पर शिशु-सा, समीप सोया धारा में एक द्वीप

   (उत्प्रेक्षा/रूपक/उपमा)

आइए जानें-

(1) किंशुक कुसुम समझकर झपटा, भौंरा शुक की लाल चोंच पर।

तोते ने निज ठौर चलाई, जामुन का फल उसे समझकर॥

(2) लक्ष्मी थी या दुर्गा थी या स्वयं वीरता का अवतार।

यहाँ पहले उदाहरण में भ्रमर को तोते की चोंच में किंशुक कुसुम होने का भ्रम हो गया है तथा तोते को भ्रमर में जामुन फल का भ्रम हो गया है।

दूसरे उदाहरण में अनिश्चयात्मक स्थिति है- कवि सोच ही नहीं पा रहा कि वह लक्ष्मी है या रणचण्डी दुर्गा अथवा वीरता की अवतार। यहाँ साहस मूलक संशय बना हुआ है।

समझिए-

जहाँ भ्रम वश किसी वस्तु को सादृश्य के कारण अन्य वस्तु समझ लिया जाए । समानता के भ्रम से निश्चयात्मक स्थिति होने पर भ्रान्तिमान अलंकार होता है। किन्तु जहाँ किसी वस्तु में उसी के समान वस्तु का संशय हो जाए और अनिश्चय बना रहे तो वहाँ सन्देह अलंकार होता है। उपर्युक्त प्रथम उदाहरण में भ्रान्तिमान और द्वितीय उदाहरण में सन्देह अलंकार है।

3. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए-

(क) चंद के भरम होत मोद है कुमोदनी को

(ख) ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है।

मेरे जान पौनो सीरी ठोर कौं पकरि कौंनो।

घरी एक बैठि कहूं घमै वितवत हैं।

पढ़िए-काव्यांश में प्रकृति का मानवीकरण किया है। इसमें कवि प्राय: प्राकृतिक वस्तुओं पर मानवीय भावनाओं, क्रिया कलापों का आरोप करते हैं।

4. कविवर पंत के संकलित अंश से मानवीकरण के कुछ उदाहरण छाँटकर लिखिए।

5. निम्नलिखित पंक्तियों में शब्द गुण पहचान कर लिखिए-

अ. गुंजत मधुप गान गुन गहियत है

आवै आस-पास पुहुपन की सुबास सोई

सौंधे के सुगंध माँझ सने रहियत है।

आ. मेरे जान पौनों सीरी ठौर कौ पकरि कौंनों,

घरी एक बैठि कहूं घामै बितवत है।

जानिए-

मृदु मंद-मंद मंथर-मंथर, लघु तरणि, हंसनी सी सुन्दर-पंक्ति में कथन को सौन्दर्य प्रदान करने के लिए एक ही शब्द की आवृति (मंद-मंद और मंथर-मंथर) की गई है।

काव्य में कथन सौन्दर्य के लिए एक ही शब्द की आवृति को पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार कहते हैं।

6. इस पाठ से पुनरुक्तिप्रकाश के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

7. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए –

(अ) बरन बरन तरू फूले उपवन वन, सोई चतुरंग संग दल लहियत है।

(आ) सैकत शैया पर दुग्ध धवल, तन्वगी गंगा ग्रीष्म विरल, लेटी है श्रांत, क्लांत निश्चल

(इ) विमल अकास, होत वारिज विकास, सेनापति फूले कास, हित हंसन के हीय को

8. आवन कह्यो है मनभावन सु, लाग्यो तरसावन विरह जुर जोर तैं .....में कौन सा रस है?

योग्यता विस्तार

1. अपने विद्यालय के पुस्तकालय से अन्य कवियों की प्रकृति वर्णन से संबंधित कविताएँ छाँटिए। उन्हें कवियों के कालक्रम के अनुसार लिखिए।

2. किसी प्राकृतिक स्थल का भ्रमण करने हेतु अपने सहयोगियों के साथ मिलकर एक योजना बनाइए।

3. विभिन्न ऋतुओं में से आपको कौन-सी ऋतु सबसे अच्छी लगती है? कारण सहित लिखिए।

4. प्रकृति वर्णन से सम्बंधित कोई एक कविता स्वयं बनाइए।

शब्दार्थ

प्रकृतिवर्णन

(1) **बरन-बरन**= अनेक रंगों के । **सोई**-वहीं। **चतुरंग**=चतुरंगिनी सेना, (हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल)। **वन्दीभाट**=कवि। **जिमि**= जैसे। **विरुद**=विरुदावली, प्रशंसागीत, **पहुपन**=पुष्पों की। **माझ**=बीच।

(2) **वृष को तरनि**= वृषभ राशि पर स्थित सूर्य। **सहसौं**=हजारों। **तचति**=गर्म हो जाती है। **सीरी**= ठंडी। **बिरमत**=विश्राम। **नेक**=थोड़ी। **धमका**=सन्नाटा। **पौनो**= हवा भी। **ठौर**= स्थान।

(3) **दामिनी**= बिजली। **सुरचाप**=इन्द्रधनुष। **कलापी**=मोर **शीतल है हीतल समीर झकझोरतै**= वायु के झोंकों के कारण पसीनें की बूंदे-शीतल करती है। **मदन**= कामदेव।

(4) **पाउस**= पावस, वर्षाऋतु। **जोन्ह**- चाँदनी। **वारिज**=कमल। **कमनीय**= सुन्दर। **कास**= एक प्रकार की सफेद फूलों वाली घास। **छिति**=पृथ्वी। **गरद**=धूल। **हरद**= हल्दी। **जरद**=पीला। **दुरद**= द्विरद (हाथी), **मिट्यों खंजन दरद**= खंजनपक्षी का दुख दूर हुआ (गर्मी में त्रस्त होकर पहाड़ों पर जाता है व शरद ऋतु में लौट आता है।)

(5) **सिसिर**= शीत ऋतु। **सविताऊ**= सूर्य भी। **दुति**= चमक। **बासर**= दिन। **सूर**= सूर्य। **चकवा** =एक पक्षी जिसका जोड़ा रात में अलग रहकर दिन में मिलता है, शीत की लम्बी रात व सूर्य की शीतलता कष्टदायी है।

नौका विहार-

ज्योत्स्ना= चाँदनी रात। **अपलक**= बिना पलक झुकाए। **सैकत**= रेतीली। **धवल**= श्वेत। **तन्वंगी**=दुबली पतली। **श्रांत**=शान्त। **क्लान्त**=थकी हुई। **कुंतल** =बाल । **वर्तुल**=टेड़ी-मेड़ी,घुमावदार। **सत्वर**=शीघ्र। **सिकता**=बालू। **पुलिन**=किनारा। **तारकदल**=तारों का समूह। **तिर्यक मुख**= टेढ़ा मुँह। **शाश्वत**= सदा रहने वाला।

***